KPI NAME	KPI Def.No. & KPI DEFn.	WHERE ARE WE NOW ? (SCALE & DESCRIPATION)	KPI GOAL	KPI LIMIT	WHAT WE NEED TO DO?	HOW WILL IT BE ACHIEVED	KPI MEASUREMENT	REVIEW	KPI REPORTING	KPI ACHIEVEMENT	KPI IMPROVEMENT
1. भाषीय अभिव्यक्ति में श्रवण एवं वाचन स्तर का अभिवर्धन।	1.1 उच्चारण सम्बन्धी अशुद्धियों में सुधार हेतु प्रयास। 1.2 विषय के प्रति ध्यानस्थ होने के लिए प्रेरित करना। 1.3 अर्थबोध सहित सम्भाषण का उचित अभ्यास। **1.4** सम्भावित कठिनाइयों का आभास एवं पूर्वाभ्यास।	वर्तमान स्तरानुसार पूर्व ज्ञान के अनुसार श्रवण के आधार पर 50% उच्चारण क्षमता उचित। यथा - मम नाम , भवतः नाम उचित है परन्तु भवत्याः में कठिनाई। तथैव वृद्धोपसेविनः, आयुर्विद्या अनुस्वार आदि के उच्चारण में।	65%	2% +/-	श्लोक अनुगायन एवं कठिन शब्दों के दोहराव पर बल देना। पुनः पुनः उच्चारण सम्बन्धी संज्ञान एवं सम्भाषण अभ्यास करवाना। श्लोकों के भावार्थ से प्राप्त शिक्षा की ग्राह्यता हेतु प्रेरित करना। अभ्यास पत्रकों के द्वारा उदाहरण देकर अध्यापन।	श्लोकानुगायन एवं अर्थावगमन के द्वारा। विद्यार्थियों के माध्यम से श्लोकोच्चारण में पुनरावृत्ति करवाकर। अभिनय पूर्वक सम्भाषण कक्षा का संचालन एवं आंकलन करके।	विषयावगमन के पश्चात् अभ्यास पत्रकों के माध्यम से प्रचलित कक्षा में।	विषय संवर्धन गतिविधि के अंतर्गत विविध श्लोकों का संग्रह एवं वाचन करवाकर।	गतिविधि के पश्चात्।		
2. आत्मविश्वास के स्तर को सुदृढ़ बनाना।	2.1 विषयात्मक रुचि जागृत करना। 2.2 श्लोक-अनुगायन हेतु पुनः पुनः प्रेरित किया जाना। 2.3 उच्चारण दृष्टि से अधिक अभ्यास अपेक्षित वाले कठिन शब्दों पर बल देना। 2.4 कक्षागत उदाहरणों का प्रयोग किया जाना।	अनुगायन के समय रुचि पूर्ण वातावरण दृष्टिगत होता है किन्त स्वाध्याय में 60% स्तर का आभास है। सम्भाषण दृष्टि से परस्पर परिचय के समय एवं श्लोकों का लयपूर्वक अनुगायन करते समय सहभागिता स्तर 70% तक।	70% 80%	2% +/-	लयात्मक एवं भावपूर्ण श्लोकोच्चारण हेतु अनुगायन की प्रतिदिन पुनरावृत्ति। परस्पर अभिनय के माध्यम से अभ्यास करवाना है। दैनिक शब्दों के परिचय पर अधिक ध्यान देना। यथा- शिष्टाचार सम्बन्धी शब्द- नमस्ते, नमोनमः , सुप्रभातम् , शुभकामना , शुभरात्रिः, अहम् , मम, अत्र आदि। साथ ही स्व-परिचय के संज्ञान पर बल देणं	सम्भाषण कक्षा में विविध वस्तुओं एवं स्फोरक पत्रों के माध्यम से शिक्षण करके। योग्य विद्यार्थियों की प्रस्तुतियों के द्वारा प्रेरणा देकर। श्लोक पाठ प्रतिस्पर्धा का आयोजन करके।	उपस्थापित बिंदुओं के स्पष्ट होने पर मौखिक परीक्षण के द्वारा।	विषय स्पष्ट होने पर मौखिक अभिव्यक्ति के द्वारा।	विषय स्पष्ट होने के पश्चात्।		

Annual Pedagogical Plan for session 2023-24
Grade- 6 th 7 th & 8th Subject- Sanskrit

STEP 1-

What are the problems faced in the planning and implementation of the teaching process? (This should be done classwise and subject / practice will be done during the Ensemble.

What are the problems	Compilation of problems	Categorisation of problems
1. श्लोक अनुगायन में सामान्य स्तर पर कठिनाई का आभास।	वाचन कौशल आधारित आकलन।	**Subjective problems**
2. शुद्ध उच्चारण सम्बन्धी समस्या।	श्रवण कौशल आधारित आकलन।	श्रवण कौशल के स्तर की समस्या।
3. ध्यानपूर्वक अभ्यास का अभाव।		वाचन एवं पठन कौशल के स्तर की समस्या।
4. अतिरिक्त वाचन में परिश्रम की कमी।	एकाग्रता की समस्या।	लेखन कौशल आधारित समस्या।
5. अर्थबोध एवं ग्राह्यता में असमर्थ।		
6. परिचयात्मक शब्दों के लिङ्ग-भेद की समझ में कमी।	पठन एवं लेखन कौशल आधारित अभिज्ञान।	
7. वर्तनी के अनुसार उच्चारण करने में कठिनाई।		**Behavioral problems**
8. विषय के प्रति रुचि का स्तर कम।	रुचि, जिज्ञासा एवं रचनात्मक समस्या।	एकाग्रता की समस्या।
9. लयात्मक एवं स्वरानुरूप पाठ का अभाव।	संज्ञानात्मक अभाव।	आत्मविश्वास का अभाव।
10. अधिगम के अभाव में भावपूर्ण वाचन में कमी।		परस्पर सामंजस्य की समस्या।
11. विषयानुकूल चर्चा का अभाव।	अभिव्यक्ति में आत्मविश्वास का अभाव।	
12. परस्पर सामंजस्य एवं सहयोग का सामान्य स्तर पर अभाव।	धारा प्रवाह वाचन की समस्या।	
13. लेखन कार्य में कुशलता न्यून स्तर पर।		
14. सुधार कार्य की दृष्टि से अभ्यास का अभाव।		
15. पाठ-पठन के समय सन्धियुक्त पदों में कठिनाई।		

चोइथराम विद्यालय, निपानिया
पाठ योजना-1 सत्र 2023-24
कक्षा - षष्ठी विषय - संस्कृत

विषय-
अतिरिक्त श्लोक पाठ एवं सम्भाषण कक्षा।
"श्रवणकौशल एवं वाचनकौशल की दृष्टि से"

संक्षिप्त विवरण- संस्कृत भाषा की लोकप्रियता एवं रूचि को प्रदर्शित करने हेतु सरल, सरस और जीवनोपयोगी भावार्थ से पूर्ण प्रार्थना श्लोकों का अवगमन और अनुगायन करवाना। सम्भाषण कक्षा के अंतर्गत भाषा का अपने दैनिक और लौकिक जीवन में प्रयोग किस प्रकार किया जाए, इस बिंदु को अभिनय पूर्वक स्पष्ट करना।

उद्देश्य-
KPI 1:1- श्लोकों का भावार्थ ग्रहण करते हुए शुद्ध उच्चारण के साथ गायन में समर्थ होना।so1
KPI 1:2- सम्भाषण विधि के द्वारा संस्कृत भाषा के माध्यम से परस्पर परिचय संज्ञान।so2

व्यवहारिक उद्देश्य- KPI 2:1 बिना किसी संकोच के आत्मविश्वास के साथ भाषीय शब्दों एवं छोटे वाक्यों का अपनी दिनचर्या में प्रयोग करना। Bo1

KPI 2:2 श्लोकगायन में निरंतरता बनाए रखना, साथ ही श्लोकों के भावार्थ से प्राप्त नैतिक मूल्यों का संज्ञान एवं दैनिक व्यवहार में उनका आचरण। Bo2

Bo 3 संस्कृत विषय के प्रति रुचि पूर्ण वातावरण का निर्माण।

गतिविधियाँ-
गतिविधि 1 - शिक्षा पूर्ण कथा के साथ मनोरंजन करते हुए शिक्षण के प्रति रुचि जागृत करना।
गतिविधि 2 - प्रातः स्मरणीय एवं दैनिक श्लोकों का संग्रह करवाना। KPI 2:2
गतिविधि 3 - अभिनय पूर्वक सम्भाषण कक्षा में विद्यार्थियों के बीच विमर्श।
गतिविधि 4 - श्लोक पाठ प्रतिस्पर्धा का आयोजन।

गतिविधियों की प्रक्रिया- पूर्व ज्ञान पर आधारित शिक्षा पूर्ण कथा के श्रवण से आरम्भ करना। नैतिक मूल्यों का आभास कराने वाले भावार्थ युक्त अतिरिक्त श्लोकों का अवगमन करवाना और आदर्श वाचन प्रस्तुत करना। तत्पश्चात् श्लोकानुगायन करवाया जाएगा।
श्लोकों का रुचिपूर्वक गायन सिद्ध होने पर विविध विषयों पर आधारित दैनिक श्लोकों का संग्रह करने हेतु प्रेरित करना एवं सस्वर वाचन का अभ्यास करवाया जाना।

विषय संवर्धन गतिविधि में श्लोक-पाठ प्रतिस्पर्धा का आयोजन किया जाएगा। जिसके अंतर्गत प्रति विद्यार्थी 2 श्लोकों का लयपूर्वक भावार्थ सहित प्रस्तुतिकरण अपेक्षित होगा। प्रतिस्पर्धा से पूर्व तत्सम्बन्धी मूल्यांकन बिंदु विद्यार्थियों से सांझा किए जाएंगे।

मूल्यांकन बिन्दु - सम्बद्धता - 10
लय - 10
स्वर - 10
शुद्धोच्चारण - 10
समग्र प्रस्तुति- 10

आकलन- पठित या ज्ञापित श्लोकों का विधिवत लयपूर्ण वाचन एवं कण्ठस्थीकरण हेतु सिद्ध होना।
संस्कृत सम्भाषण में परिचय की दृष्टि से सक्षम होना।

तकनीकी सामग्री का उपयोग- सम्भाषण शिक्षण एवं भाषा से सम्बंधित चित्रों, शब्दों और वाक्यों का संज्ञान पीपीटी के माध्यम से करवाना।
श्लोकानुगायन हेतु सस्वर ऑडियो क्लिप प्रेषित करना।

अपेक्षित शिक्षण-प्रतिफल- 1. श्लोकों का, 'अर्थ ग्रहणता पूर्वक' गायन करने में समर्थ होना।
2. संस्कृत भाषा के द्वारा स्वयं का परिचय देने में सक्षम होना।
3. विषय के प्रति शिक्षण-अधिगम रूचि जागृत होना।
4. भाषा की दृष्टि से सौहार्द-भाव में वृद्धि।